

चुनाव आयुक्त का चुनाव कैसा हो?

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और किसी भी लोकतंत्र की शवास हो, यह उत्की पहली शर्त है। हस्तिनिंग भारत में स्थायी चुनाव आयोग बना हुआ है। लेकिन जब से चुनाव आयोग बना है, उसके मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य आयुक्तों की नियुक्ति पूरी तरह से सरकार के हाथ में है। हमारे चुनाव आयोग ने सरकार पार्टियों के खिलाफ कई बड़ा बार कार्रवाई की है लेकिन माना यही जाता है कि हर सकार अपने मानपदंश नीकरण को ही इस पद पर नियुक्त करना चाहती है कि बड़ा बार लाख निष्पक्ष दिव्ये लेकिन मूलतः वह सत्तालुप करने के हित-रक्षा करता रहे। इसी आधार पर सुप्रीम कोर्ट में अलग गोयग की ताजतरीन नियुक्ति के विरुद्ध बहस चल रही है।

गोयल 17 नवंबर के केंद्र सरकार के सचिव के तौर पर काम कर रहे थे, लेकिन उन्हें 18 नवंबर को स्वीचिक्ष नियुक्ति दी गई और 19 नवंबर को उन्हें मुख्य चुनाव आयुक्त बना दिया गया। उनके पहले अदालत इस विषय पर विचार कर रही थी कि चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति प्रक्रिया में सुधार कैसे किया जाए। किसी भी अपरसर को स्वीचिक्ष सेवानिवृत्ति के पहले तीन माह का नोटिस देना होता है लेकिन सकार ने तीन दिन नहीं लगाया और गोयल को मुख्य चुनाव आयुक्त की कुछ में ला बिटाया। इसका अर्थ बाब बया बह नहीं हुआ कि लाल में कुछ काना है? इसी प्रश्न को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने अब सरकार को तंगी खिंचाई कर दी है।

अदालत ने सरकार को आदेश दिया है कि गोयल की इस आनन्द-फनन नियुक्ति के हस्त को वह उजागर करे। नियुक्ति की फाईल अदालत के सामने पेश की जाए। अदालत की यह रुकी है कि नोटिस का अवधारणा द्वारा ही नहीं जान-जन की भावनात्मक अस्थान का आधार भी है, ऐसे में जन देश के अन्य - अलग राजनीतिक दल धर्म और जाति के नाम पर अपने बांटों का समीकरण बनते हो तो सियासी दांव पेंच के बीच गंगा का राजनीतिक रूप से भी आ जाना लाजिमी ही है।

प्रेरक कथा



जब चोर की छड़ी हुई एक अंगुल छोटी

बहुत पुरानी बात है। एक अमीर व्यापारी के यहाँ चोरी हो गयी। बहुत तलाश करने के बावजूद सामान न मिला और न ही चोर का पता चला। तब अमीर व्यापारी शराब के काजी के पास पहुँचे और चोरी के बारे में बताया। सबकुछ सुनने के बाद चोरी के लिए थोड़ी देर अकेले कर्म में बढ़ा गया। इसके कुछ बाद चोरी के साथी नीतों और मित्रों को अपने कर्म में बुलाया। जस्ते सामाने पहुँच गए तो काजी ने सब को एक-एक छड़ी दी। सभी छड़ियाँ बराबर थीं। न कोई छोटी न बड़ी। सब को छड़ी देने के बाद काजी बोला, 'इन छड़ियों को आप सब अपने अपने घर ले जाओ और कल सुबह वापस यहाँ आये।' जब चोरी की व्यापारी के बालों के देखने से चोरी के पास जा रहे थे एक ऊंगली के बराबर अपने आप ही जाते हैं। योगी चोर नहीं होता, उस की छड़ी ऐसी की ऐसी रहती है। न बढ़ती है, न घटती है। इस तरह में चोर और बुगाह की पहचान कर लेता है।'

